Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.33
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

तमसा और सरयू नदी

(वाल्मीकि रामायण के विशिष्ट परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार तिवारी
विषय विशेषज्ञ प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनउ विश्वविद्यालय, लखनउ।

भारत में असंख्य नदियां हैं, जो देश की जीवन रेखा हैं। उत्तर से दक्षिण भारत तक नदियों की बहुलता हैं। कुछ नदियां वर्ष भर जल से परिपूर्ण रहती हैं, वहीं कुछ वर्षा द्वारा ही जल ग्रहण करती हैं। कुछ नदियां अपने उद्गम स्थल से चलकर सीधे सागर में ही मिलती हैं वहीं कुछ नदियां दूसरी नदियों में अपना जीवन समाहित कर लेती हैं। जहां अधिकांश नदियों का उद्गम स्रोत पर्वत हैं वहीं कुछ नदियां मैदानी क्षेत्रों से भी जन्म लेती हैं। भारत की अधिकांश नदियां पूरब दिशा की ओर प्रवाहित होती हुई बंगाल की खाड़ी में महासागर में मिल जाती हैं लेकिन कुछ नदियों का मिलन स्थल पश्चिम दिशा में स्थित अरब सागर भी है। उत्तर से दक्षिण तक भारत की अधिकांश नदियां धार्मिक आस्था का केन्द्र तो हैं ही साथ ही प्राचीन काल से चली आ रही सभ्यता का वाहक भी हैं। समस्त प्राचीन सभ्यताओं की जननी मानी जाने वाली यह नदियां आज भी उसी रूप में धार्मिक आस्थाओं का केन्द्र होते हुए, जन–मानस में एक ईश्वरीय स्थान ग्रहण कर चुकी हैं।

वाल्मीकि रामायण में लगभग पचास से अधिक नदियों का उल्लेख है, जिनका किसी न किसी रूप में कोशलवासी इक्ष्वाकुवंशी श्रीराम से सम्बन्ध अवश्य रहा है। इन नदियों में सरयू, तमसा, गंगा, यमुना, मन्दाकिनी और कावेरी ने श्रीराम के जीवन में अपना प्रमुख स्थान बनाया।

प्रस्तुत लेख में वाल्मीकि रामायण में विशेष सन्दर्भित श्रीराम के जीवन में प्रमुख स्थान रखने वाली तमसा और सरयू नदी का ही विवरण दृष्टव्य है, जो अयोध्या या अवध क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली नदियों में अपना प्रमुख स्थान रखती है।

Received: 12.10.2021 **Accepted:** 27.10.2021 **Published**: 28.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.33
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02

1.तमसा–

यह रामायणकालीन एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नदी है। गंगा के समीप प्रवाहित होने वाली इस नदी के तट पर वाल्मीकि जी के पहुंचने का उल्लेख है।[1] वाल्मीकि जी ने अपने शिष्य भरद्वाज से इस नदी के घाट की सुन्दरता, जल की स्वच्छता और इसके कीचड. रहित होने का वर्णन किया है।[2] जल की स्वच्छता से ही प्रभावित होकर वाल्मीकि जी ने इस नदी में स्नान किया और इसी के समीप स्थित रमणीक वनों में भ्रमण करते समय ही उन्हें एक युगल क्रौंच (सारस) पक्षी दिखाई दिया, जिसके एक पक्षी को निषाद द्वारा मार दिया गया।[3] उन पक्षियों की पीड़ा से ही व्यथित होकर वाल्मीकि जी ने क्रोधावेश में निषाद के लिए जो शब्द[4] कहे उन्हीं को आदिकाव्य (रामायण) की प्रेरणा का स्रोत माना जाता है।[5] गंगा के समीप बहने वाली इसी नदी के तट पर ही वाल्मीकि मुनि के आश्रम होने का भी उल्लेख है[6], जहां श्रीराम जी द्वारा निष्कासित सीता जी ने वास किया था[7] और वर्णित है कि इसी आश्रम में कुश और लव का जन्म भी हुआ था।[8]

यह तमसा नदी नागौद के दक्षिण में महियार (म.प्र. की एक भू.पू. रियासत) से निकलकर रीवां के उत्तरी भाग से बहती हुई, इलाहाबाद के दक्षिण–पूर्व में लगभग 18 मील दूर गंगा नदी में आकर मिलती है। महाराज सर्वनाथ के खोह ताम्रपत्र में इस नदी का वर्णन प्राप्त होता है, जो वर्तमान तमसा या टोंस नदी है।[9] एफ.ई.पॉर्जिटर के अनुसार–''यह इलाहाबाद के आगे गंगा नदी में दाहिने तट पर मिलती है।''[10] मार्कण्डेय पुराण(सर्ग, 7,22) में भी इस नदी का वर्णन है। कूर्म पुराण(7,30) में इसका एक नाम 'तामसी' भी मिलता है।[11]

प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. अवध बिहारी लाल अवस्थी के अनुसार–''तमसा वर्तमान टोंस नदी है जो मार्कण्डेय पुराण में वर्णित ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली नदियों में एक है और

Received: 12.10.2021 **Accepted:** 27.10.2021 **Published**: 28.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.33
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

यह नदी इलाहाबाद के नीचे गंगा में मिलती है।''[12] कालिदास कृत 'रघुवंश'[13] और भवभूति कृत 'उत्तररामचरित'[14] में भी तमसा नदी का उल्लेख है।

तमसा नदी भगवान राम के वनगमन से सम्बन्ध रखने वाली नदियों में भी प्रमुख है। अयोध्या से वन जाते समय श्रीराम के रास्ते में पडने वाली पहली नदी तमसा ही थी और उल्लेख है कि इसका प्रवाह वहां तिरछा था।[15] इसी नदी के तट पर श्रीराम ने लक्ष्मण और सीता सहित अन्य अवधवासियों के साथ अपनी पहली रात बिताई थी।[16] तुलसीदास जी द्वारा रचित 'रामचरितमानस' में भी इस स्थल का उल्लेख है।[17] तीव्रगति से बहने वाली इस नदी को लक्ष्मण और सीता सहित श्रीराम ने सचिव सुमन्त के रथ पर बैठकर पार किया था।[18] अयोध्या के समीप बहने वाली इस तमसा नदी का उद्गम स्थल अयोध्या जिले के अंतिम पश्चिमी छोर पर स्थित मवई ब्लॉक के लखनीपुर गांव के समीप है। यहां स्थित सरोवर से ही इसका उद्गम माना जाता है। यहां से चलकर यह अयोध्या से लगभग 12 मील दक्षिण में बहती हुई, लगभग 36 मील यात्रा के बाद अकबरपुर, जि. अम्बेडकरनगर के पास बिस्वी नदी में मिल जाती है। यहां से इस संयुक्त नदी का नाम टोंस हो जाता है, जो तमसा का ही अपभ्रंश है। अयोध्या से लगभग 12 मील दूर तरीडीह नामक ग्राम है, जहां स्थानीय जनस्रुति के अनुसार वनवास यात्रा के समय श्रीराम ने तमसा नदी को पार किया था। यहां स्थित घाट को स्थानीय लोग 'रामचौरा' के नाम से जानते हैं। यहां से आगे चलकर यह नदी आजमगढ में बहती हुई बलिया के पश्चिम में गंगा नदी में मिल जाती है। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. बिमल चरण लाहा का भी मानना है कि–''तमसा या पूर्वी टोंस नदी फैजाबाद से निकलती है और आजमगढ से बहती हुई बलिया के पश्चिम में गंगा नदी में मिल जाती है।''[19] प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ.ए.बी.एल.अवस्थी ने एक अन्य तमसा नदी का भी उल्लेख किया है। उनके अनुसार–''इसका एक नाम टोंस भी है और यह देहरादून के पास बहने वाली एक नदी है।''[20] रामायण में तमसा तट पर बहुत सी गायों के होने का भी वर्णन है।[21] डॉ. दिनेश

Received: 12.10.2021 **Accepted:** 27.10.2021 **Published**: 28.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.33
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

चन्द्र सरकार के अनुसार–''मन्दाकिनी नदी पुराणों में वर्णित ऋक्षवत् पर्वत से निकलती है। यह आधुनिक टोंस ही है जो इलाहाबाद के नीचे गंगा में मिल जाती है।''[22]

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि संभवतः भारत में तमसा या टोंस नाम की तीन नदियां हैं। जिनमें से दो रामायण काल में प्रसिद्ध रहीं और उनका भगवान श्रीराम से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। तीसरी हिमालय की पहाडियों से निकलने वाली, उत्तराखण्ड में प्रवाहित कोई अन्य तमसा नदी है, जिसका रामायण में कोई उल्लेख नहीं है और राम वनगमन पथ में पड़ने वाली नदियों से इसका कोई सम्बन्ध भी नहीं है।

2.सरयू–

रामायण में उल्लेख मिलता है कि कोशल नाम का एक बड़ा जनपद सरयू नदी के तट पर बसा हुआ था[23] और इसी जनपद में महाराज मनु द्वारा बसायी हुई अयोध्या नाम की एक नगरी भी थी।[24] रामायण के अनुसार राजा दशरथ ने पुत्र कामना हेतु पुत्रेष्टि यज्ञ करने के पूर्व सरयू नदी के उत्तरी तट पर ही अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ किया था।[25] रामायण में अयोध्या से सरयू नदी की दूरी मात्र डेढ योजन बताई गई है।[26] अयोध्या से राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाते समय विश्वामित्र ने सरयू के दक्षिण तट पर पहुंचकर राम से इस नदी के पावन जल से आचमन हेतु कहा था[27] और फिर राम, लक्ष्मण ने इसी नदी के दक्षिणी तट पर अपनी पहली रात्रि तृण की शया पर सुखपूर्वक शयन कर बिताई थी।[28] रामायण में उल्लिखित है कि दूसरे दिन विश्वामित्र दोनों राजकुमारों को लेकर गंगा–सरयू के संगम पर पहुंचे जहां पर महर्षियों का एक पवित्र आश्रम भी था। यहीं पर तीनों लोगों अपनी दूसरी रात सुखपूर्वक व्यतीत की थी।[29] रामायण के अनुसार 'अंग देश' गंगा–सरयू के संगम पर ही बसा हुआ था।[30] रामायण में वर्णित है कि सरयू नदी के तट पर ही राजा दशरथ द्वारा शिकार खेलते समय धोखे से श्रवण कुमार का वध हो गया था।[31] वर्णित है कि सरयू नदी के गोप्रतार

Received: 12.10.2021 **Accepted:** 27.10.2021 **Published**: 28.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.33
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

घाट पर ही श्रीराम ने अपने साथ आए हुए प्रियजनों सहित जल समाधि ली थी।[32] रामायण के अनुसार अयोध्या से गोप्रतार घाट की दूरी मात्र डेढ़ योजन थी।[33]

महाभारत (84.70) में इस नदी का उल्लेख सरयू नाम से ही है। पाणिनी की अष्टाध्यायी (6,4.174) में भी सरयू का वर्णन है। पद्म पुराण (उत्तर खण्ड, श्लोक 35–38) में भी इसका वर्णन किया गया है। कालिदास ने अपने रघुवंश (8.95, 9.20) में भी इसका वर्णन किया है। बौद्ध ग्रंथ के अनुसार यह नदी हिमालय से निकलती है (मिलिन्दपन्ह, पृ.114)। ऋग्वेद (4. 30,18, 10.64,9) में भी इसका वर्णन मिलता है। टॉलमी द्वारा वर्णित सैरबोस (sarabos) यही है। यह प्राचीन बौद्ध ग्रंथों में वर्णित पांच महानदियों में से एक है।[34] ए.बी.एल. अवस्थी के अनुसार–''कैलास पर्वत के दक्षिण या त्रिककुत्–अंजन गिरि के निकट ही वैघुत पर्वत था। उसक नीचे मूल भाग में स्थित मानससर से ही सरयू नदी निकलती है।''[35] बी.सी. लाहा के अनुसार–''गंगा की सहायक नदी सरयू छपरा जिले में गंगा में मिलती है। यह बड़ी ऐतिहासिक नदी घर्घरा या घाघरा नाम से भी जानी जाती है।''[36] तुलसी कृत 'रामचरितमानस' में सरयू नदी का अयोध्या के उत्तर दिशा में प्रवाहित होने का उल्लेख है।[37] रामायण के अनुसार सरयू नदी का उद्गम स्थल कैलास पर्वत स्थित मानसरोवर है, जिसे ब्रम्हसर भी कहा जाता है।[38] रामायण में सरयू का गंगा नदी में संगम होने का भी उल्लेख है और वर्णित है कि इस समय इसकी होने वाली आवाज अतुलनीय है।[39]

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि तमसा और सरयू नदी रामायण काल में अवध क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली नदियों में अपना प्रमुख स्थान रखती थी। आज भी सरयू नदी भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या में एक मां के रूप में पूजनीय होते हुए हिन्दू आस्था का प्रमुख केन्द्र बनी हुई है। तमसा नदी पिछले कुछ वर्षों में लुप्तप्राय सी हो गई थी लेकिन वर्तमान में प्रशासन के सहयोग से इसका भी पुनरुद्धार हुआ है।

Received: 12.10.2021 **Accepted:** 27.10.2021 **Published**: 28.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.04.02.33
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

संदर्भ

1. वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड / 2 / 3
2. बाल. / 2 / 5
3. बाल. / 2 / 6–14
4. बाल. / 2 / 15
5. बाल. / 2 / 30–36
6. उत्तरकाण्ड / 45 / 17
7. उत्तर. / 49 / 14–23
8. उत्तर. / 66 / 1–3
9. बिमल चरण लाहा– भारत का ऐतिहासिक भूगोल, पृ. 221
10. उपर्युक्त
11. उपर्युक्त, पृ. 221–222
12. अवध बिहारी लाल अवस्थी– प्राचीन भारतीय भूगोल, पृ. 260
13. रघुवंश
14 .उत्तररामचरित
15. अयोध्याकाण्ड / 45 / 32
16. अयोध्या. / 46 / 2
17. अयोध्याकाण्ड, दोहा–84,''तमसा तीर निवास किए प्रथम दिवस रघुनाथ।''
18. अयोध्या. / 46 / 27,28
19. बिमल चरण लाहा– भारत का ऐतिहासिक भूगोल, पृ. 222
20. अवध बिहारी लाल अवस्थी– प्राचीन भारतीय भूगोल, पृ. 66
21. अयोध्या. / 46 / 17

Received: 12.10.2021 **Accepted:** 27.10.2021 **Published**: 28.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.33
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

22- D.C. Sarkar– 'cosmography and geography in early Indian literature', p.86

23. वाल्मीकि रामायण–बाल. / 5 / 5,संक्षिप्त वाल्मीकि रामायण– बाल. / 2 / 25
24. वा.रा.– बालकाण्ड / 5 / 6, सं.बा.रा.– बाल. / 2 / 26
25. वा.रा.– बाल. / 14 / 1,सं.वा.रा.–बाल. / 3 / 58
26. ''अध्यर्धयोजनं गत्वा सरत्वा दक्षिणे तटे।।''– बाल. / 22 / 11
27. वाल्मीकि रामायण– बाल. / 22 / 11,12
28. बाल. / 22 / 23
29. बाल. / 23 / 5,6,16,17
30. बाल. / 23 / 14
31. अयोध्या. / 63 / 20–53
32. उत्तरकाण्ड / 110 / 22
33. उत्तरकाण्ड / 110 / 11
34. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 204
35. ए.बी.एल. अवस्थी– उपर्युक्त, पृ. 256
36. बी.सी.लाहा– उपर्युक्त, पृ. 53
37. ''उत्तर दिश बह सरयू पावन।''– रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड / 3 / 5
38. बाल. / 24 / 8,9
39. बाल. / 24 / 10

Received: 12.10.2021 **Accepted:** 27.10.2021 **Published**: 28.10.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.